गुरुप्रसाद मैनाली की कहानियों पर प्रेमचंद का प्रभाव

guruprasad mainali ki kahaniyon par premchand ka prabhaw

एम.फिल. हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र: 2014-15

प्रस्तुतकर्ता

नीतू थापा

पंजीयन सं. 2014/02/215/021

ज्ञान शांति मैत्री

हिंदी एवं तुलनात्मकसाहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतरर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा- 442001(महाराष्ट्र), भारत

भूमिका

नेपाल एक दक्षिण एशियाई भू-परिवेष्ठित हिमालयी राष्ट्र है। भौगोलिक दृष्टि से देखे तो नेपाल के उत्तर से चीन का स्वायत्तशासी प्रदेश तिब्बत है और दक्षिण व पश्चिम में भारत अवस्थित है। नेपाल के 81 प्रतिशत नागरिक हिन्दू धर्मावलम्बी है। भारत और नेपाल इन देशों के भाषाओं के लिए कहा जाता है कि हिंदी की बहन नेपाली है। पहले से ही इन दो देशो के बीच आगत-निर्गत होते रहते थे साथ ही गमनागमन भी हुआ करती थी जिसे आज के आधुनिक समय में प्रोधोगिकी ने इस क्षेत्र को और अधिक बढ़ा दिया है। इन दो देशों की घनिष्ठता इतनी है कि भारत के नागरिक नेपाल में जा कर अपना व्यापार करते है तो वही नेपाल के लोग भारत में आकर अपना जीवन निर्वाह कर रहे है साथ ही अपने संस्कृति का भी आदान-प्रदान कर रहे हैं अगर देखे तो इन दो देशो के संस्कृति में अधिक भिन्नता देखने को नहीं मिलती बस इनके नाम और इसे पूर्ण करने के ढंग में अलगाव पाया जाता है पर दोनों का उद्देश्य एक ही रहता है। ये दो देश खास कर अपनी धार्मिकता और तीर्थ स्थानों के लिए भी जाने जाते हैं। इसी तरह इन दो देशो के बीच हमें कई समानताएं देखने को मिलती है। इसका असर हमारे साहित्यिक जगत में भी पड़ता है। नेपाली साहित्य कहीं न कहीं हिंदी साहित्य से प्रभावित है। हिंदी रचनाओं में जिन तथ्यों को उठाई जाती है, वैसे ही तथ्य वहाँ के साहित्य में भी मिलती है जैसे- सामाजिक, राजनैतिक, संस्कृतिक, धार्मिकत, पारिवारिक, स्त्री समस्या, वर्ग समस्या, ग्रामीण जीवन आदि।

कहानी का जन्म सृष्टि के प्रारम्भ से ही माना जाता है। आज की कहानियों का पूर्व रूप सृष्टि जितनी ही पुरानी है इसे कहने और सुनने की परम्परा मानव जीवन से ही शुरु हुई यह माना जाता है, साथ ही यह मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग और परम्परा है। इसी तरह हिंदी और नेपाली कहानियों का आरम्भ पहले ही हो चुका था ।

हिंदी साहित्य जगत के कथा सम्राट प्रेमचंद एक ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने अपनी सारी लेखनी समाज में घट रही यथार्थ घटनाओं पर न्योछावर कर दी। उन्हें यथार्थवादी लेखक के नाम से भी जाना जाता है। जैसे कहा है कि किसी देश को जानने के लिए उसके गाँव को जानना आवश्यक है क्योंकि उस देश की सारी समस्याएँ गाँव में ही रहती है। प्रेमचंद के कहानियों में भी हमें अधिकतर ग्रामीण समस्याएँ देखने को मिलती हैं। नेपाली कथाकार गुरुप्रसाद मैनाली जी की कहानियों में भी ग्रामीण जीवन की समस्याएँ देखी जाती हैं। मैनाली जी भी नेपाली कथा साहित्य में यथार्थवादी कथाकारों में आते हैं।

इन दोनों कथाकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से ग्रामीण जीवन के समस्याओं को उजागर किया। मैनाली जी के कहानियों में प्रेमचंद के प्रभाव को देखा जाता है पर इसके बावजूद भी नेपाली कथा साहित्य में उन्होंने अपना एक अलग स्थान बनाया है। उनकी लेखन शैली ही उन्हें नेपाली कथा साहित्य जगत में विशिष्ट और मौलिक लेखक बनता है।

भारत का बनारस जनपद एक ऐसा स्थान था जहाँ नेपाली आकर शिक्षा ग्रहण किया करते थे। ये दोनों देश एक दूसरे के करीब होने के कारण नेपाली साहित्य में हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य और प्रेमचंद का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक सी बात है। जिस समय नेपाली कथा साहित्य अपने विकास क्रम की ओर था वहाँ कहानी का आरम्भ प्राथमिक काल वि.सं.-1827-1957(सन्-1770-1800) में शक्तिबल्लभ अर्याल के द्वारा अनुदित कृति 'महाभारत विराजपर्व' वि.सं.-1827(सन्-1770) से हुआ था।

पर जैसे-जैसे कहानी का विकास होता गया इस क्षेत्र में अनेक कृतियाँ लिखी जाने लगी। पर इस विकास क्रम में आधुनिक यथार्थवादी कहानी लिखने का श्रेय मैनाली को जाता है। नेपाली कथा साहित्य में मैनाली जी प्रथम ऐसे कथाकार थे जिन्होंने कहानी के मोड़ को बदला। इनकी कहानियाँ समाज के यथार्थ का चित्रण करने लगी।

मैनाली नेपाली, हिंदी, भोजपुरी, मैथिली भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे। इसी फलस्वरूप सम्भवतः इन्होंने हिंदी भाषा की कई पुस्तकों का अध्ययन किया होगा, जिसके कारण मैनाली की कृतियों पर प्रेमचंद का प्रभाव पड़ा। इनकी प्रथम कहानी 'नासो' इस तथ्य का प्रमाण है। 'नासो' कहानी की कथावस्तु प्रेमचंद की प्रथम कहानी 'सौत' की कथावस्तु से मिलती जुलती है।

इस लघु-शोध कार्य के भूमिका में कई बातों को स्पष्ट करना आवश्यक है, जिससे कि आगे कोई भ्रम पैदा न हो। इस लघु-शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए नेपाली कथा साहित्य की जिन पुस्तक को आधार ग्रन्थ तथा जिन पुस्तकों को सन्दर्भ ग्रंथों के रूप में प्रयोग किया गया है वे सभी मूल रूप से नेपाली भाषा में लिखी गई पुस्तकें हैं। नेपाली और हिंदी भाषा की लिपि चाहें एक ही क्यों न हो पर उसके बोलने का ढंग और लिखने की शैली साथ ही भाव प्रकट करने में अंतर आ ही जाती है। जिसके कारण इस शोध में आए नाम, शब्द और बोली जाने वाली भाषाएँ शुद्ध न जान पड़े तो इन त्रुटियों के प्रति पहले ही आगाह करना आवश्यक जान पड़ता है। यहाँ स्थान के लिए भी अलग-अलग शब्दों

का प्रयोग किया गया है जैसे नेपाली पुस्तकों में 'काठमांडू' शब्द के लिए 'काठमाडौं' शब्द का प्रयोग मिलता है तो वहीं नेपाली साहित्य या नेपाल में हिंदी भाषा या साहित्य के लिए भारत में कोई कोई लेख निकला हो तो वहां 'काठमांडू' शब्द का प्रयोग किया गया है। इसलिए इस शोध में जहाँ इन शब्दों के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है उसका वैसा ही प्रयोग इस शोध में किया गया है। साथ ही नेपाली पुस्तकों में 'नेपाली साहित्य को इतिहास' जैसे शीर्षकों का प्रयोग है वही इसे हिंदी में बदल कर उसके पास लिखा गया है ऐसे कई शीर्षक है जिसको हिंदी में लिखा गया है। नेपाल एक हिन्दू बहुल राष्ट्र होने के कारण वहाँ ईसवी के लिए विक्रम संवत् का प्रयोग किया जाता है और भारत में इसके लिए सन् का प्रयोग किया जाता है अतः यहाँ वि.सं. के साथ-साथ सन् का भी उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध का विषय है 'गुरुप्रसाद मैनाली की कहानियों पर प्रेमचंद का प्रभाव' यह प्रभाव मैनाली पर किस तरह पड़ा यह देखना इसका मूल उद्देश्य है। शोध के प्रथम अध्याय में प्रेमचंद और गुरुप्रसाद मैनाली के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। यह परिचय यहाँ इसलिए भी आवश्यक था चूंकि प्रेमचंद से समस्त हिंदी जगत परिचित है पर गुरुप्रसाद मैनाली को हिंदी क्षेत्र में कोई नहीं जानता। जिसके कारण इन दोनों रचनाकारों का परिचय इस लघु-शोध कार्य के आरम्भ में देना आवश्यक जान पड़ता है।

द्वितीय अध्याय में प्रेमचंद और मैनाली की कहानियों को केंद्र में रखते हुए हिंदी और नेपाली कथा साहित्य के अन्तःसम्बन्ध पर चर्चा की गई है। इन दोनों कथाकारों की कहानियों को केंद्र में रखना इसलिए भी आवश्यक था चूंकि इनसे ही हिंदी और नेपाली कथा साहित्य में आधुनिक काल व यथार्थवादी धारा का आरम्भ हुआ था, साथ ही इस धारा में अन्य कौन-कौन से लेखक आए इसकी भी चर्चा की गई है। आगे हिंदी और नेपाली कथा साहित्य के आरम्भ के सम्बन्ध में संक्षिप्तता से बताते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि इनसे पहले हिंदी और नेपाली कथा साहित्य का क्या रूप था और उसका समाज पर कैसा प्रभाव देखा जाता था। चूंकि हिंदी और नेपाली कथा साहित्य का अन्तःसम्बन्ध पर बात कर रहे है तो यहाँ यह भी दिखाना आवश्याक था कि नेपाल में हिंदी साहित्य की, हिंदी भाषा की और साथ में दोनों साहित्यों में अनुवाद के माध्यम से क्या कार्य हुआ यह भी स्पष्ट किया गया है। वहाँ हिंदी साहित्य का पठन-पाठन होता है या नहीं,और हिंदी भाषा में लिखने वाले साहित्यकारों के बारे में भी बताया गया है।

तृतीय अध्याय में गुरुप्रसाद मैनाली की कहानियों पर प्रेमचंद की कौन-कौन सी कहानियों का प्रभाव देखा गया है इसकी जाँच करनी है। इस प्रभाव को देखते हुए यह भी स्पष्ट किया गया है कि एक साहित्यकार पर यह प्रभाव किस तरह पड़ता है और वह प्रेरित होकर या प्रभावित होकर अपनी रचनाएँ तो करता है पर वह कभी भी उस रचनाकार का सीधा-सीधा अनुकरण नहीं करता है। वह कहानी को मौलिकता प्रदान करते हुए उसे अपने लेखन के अनुसार अपनी विचार धारा के अनुसार विस्तार देता है। मैनाली की कई कहानियाँ प्रेमचंद की कहानियों के कथावस्तु से मिलती है फिर भी उसमे थोड़ी बहुत भिन्नता दिखाई देती है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत तीन उपाध्यायों को रखा गया है। पहले उपाध्याय में प्रेमचंद और मैनाली की कहानियों में सामाजिक समस्याओं को देखा गया है। इसमें किसान समस्या,स्त्री समस्या के साथ अन्य समस्याओं में अंतरजातीय समस्या, जमींदारी समस्या, ऋण समस्या आदि समस्याओं को दिखाया गया है। द्वितीय उपाध्याय है प्रेमचंद और मैनाली के लेखन की विशेषताओं को बताया गया है कि किस प्रकार एक लेखक अपने लेखन कार्य से साहित्यिक जगत में विशेष बनता है। अंत में तृतीय अध्याय में प्रेमचंद और मैनाली की कहानियों में साम्यता और वैषम्यता को दिखाया गया है। साम्य और वैषम्य कई कारणों से दिखाई पड़ते हैं। दोनों लेखकों के काल-क्रम में वैष्म्यता तो है ही, साथ ही विचारों में भावों में देश काल वातावरण और परिवेश में भी साम्यता के साथ-साथ वैष्म्यता दिखाई देती है।

इस प्रकार 'गुरुप्रसाद मैनाली की कहानियों पर प्रेमचंद का प्रभाव' का अध्यायीकरण करते हुए कई मुद्दों का अध्ययन किया गया है। यह सभी भली-भांति जानते हैं कि किसी भी साहित्यकार पर जब अन्य साहित्यकार का प्रभाव हो तो उसकी विचारधारा में थोड़ा बहुत फर्क दिखाई पड़ता है। इसके बावजूद भी उस व्यक्ति का अपना खुद का व्यक्तित्व होता है जो कभी मिट नहीं सकता।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करने में मेरे शोध निर्देशक डॉ रामानुज अस्थाना के प्रति में आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन कर इस लघु-शोध कार्य को पूर्ण करने में सहायता की।

साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह एवं हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य के विभागध्यक्ष प्रो॰ सूरज पालीवाल की आभारी हूँ। जिन्होंने उक्त विषय पर लघु शोध-प्रबंध कार्य करने का मुझे अवसर प्रदान किया।

मैं आभारी हूँ अपने गुरु श्री अखिल कुमार सिंह जी की जो हिंदी विभाग लक्ष्मी नारायण कॉलेज उड़ीसा के अध्यापक हैं। इन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया।

मैं आभारी हूँ डॉ रूपेश कुमार सिंह की जिन्होंने मेरे इस शोध-प्रबंध ममें समय-समय पर सहायता की | साथ ही विभाग के सभी अध्यापकों के प्रति में आभारी हूँ।

मैं अपने माता-पिता, दीदी और परिवार के सभी सदस्यों के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने घर की जिम्मेदारियों से मुक्तकर मुझे यह अवसर प्रदान किया। निश्चित ही उन्हें यह शोध प्रबंध देखकर हर्ष महशूश होगा। मैं आभारी हूँ अपने अभिन्न मित्र मिलन मोथे की जिन्होंने इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मुझे सामग्री उपलब्ध करवायी जिससे यह शोध कार्य पूर्ण हो सका। साथ ही मैं बिमल गुरुङ्ग और दावा छिरिंग तामङ्ग की भी आभारी हूँ जिन्होंने सामग्री संकल में मेरी सहायता की।

अंत में मैं आभारी हूँ, अंकिता दीदी, बबिता सिंह, गरिमा सिंह और अपने दोनों जूनियर जयंती हांसदा और इंद्राणी कुमारी की जिन्होंनेइस शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरी सहायता की। साथ ही उन सभी के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरी सहयता की |

नीतू थापा

विषयानुक्रमाणिका

भूमिका **1-5**

प्रथम अध्याय- प्रेमचंद और गुरुप्रसाद मैनाली का व्यक्तित्व और कृतित्व **7-16**

1.1 प्रेमचंद का व्यक्तित्व और कृतित्व
1.2 मैनाली का व्यक्तिव और कृतित्व

द्वितीय अध्याय- हिंदी और नेपाली कथा साहित्य का अन्तःसम्बन्ध **17-37**

1.1 हिंदी कथा साहित्य का संक्षिप्त परिचय
1.2 नेपाली कथा साहित्य का संक्षिप्त परिचय
1.3 हिंदी और नेपाली कथा साहित्य का अन्तःसम्बन्ध

तृतीय अध्याय- गुरुप्रसाद मैनाली की कहानियों पर प्रेमचंद का प्रभाव **39-69**

चतुर्थ अध्याय- प्रेमचंद और मैनाली की कहानियों में समस्याएँ,साम्य-वैषम्य और लेखन की विशेषताएं **71-102**

4.1 प्रेमचंद और गुरुप्रसाद मैनाली के कहानियों में सामाजिक समस्याएं

4.2 प्रेमचंद और गुरुप्रसाद मैनाली कहानियों में साम्य एवं वैषम्य

4.3 प्रेमचंद और गुरुप्रसाद मैनाली के लेखन की विशेषताएं

उपसंहार **103-104**

सन्दर्भ सूची **105-107**

उपसंहार

उपसंहार

करुणा और संवेदना साहित्य का मूल धर्म है, सामाजिक जीवन की जो व्यवस्था साहित्यकार को विशेष प्रभावित करती है वह उसे अपनी रचनाओं में चित्रित करता है और इन रचनाओं का प्रभाव समाज के शिक्षित और अशिक्षित दोनों वर्गों पर पड़ता है | हिंदी साहित्य में साहित्यकारों की परम्परा का निर्वाह प्रेमचंद ने बखूबी किया है और जैसा कि, साहित्य भाषा, देश और काल से परे भी प्रभाव डालता है | इसी तरह का प्रभाव हिंदी साहित्य से बहार नेपाली साहित्य जगत पर भी देखने को मिलता है | गुरुप्रसाद मैनाली जो नेपाली साहित्य जगत के एक ऐसे कथाकार है, जिन्होंने नेपाली कथा साहित्य में आधुनिकता लायी इनसे ही नेपाली कथा साहित्य में यथार्थवादी धारा का आरम्भ हुआ | मैनाली पर भी कथा सम्राट प्रेमचंद का प्रभाव देखा जाता है | इन दोनों कथाकारों को अपने समय, समाज और देशकाल वातावरण का गहरा अनुभव था | इन्होंने अपने-अपने साहित्य को वो निधि प्रदान की जो अंत तक अपनी प्रासंगिकता बांधे हुए है|

कथा एक ऐसी विधा है जिसमें एक छोटी कहानी के माध्यम से समाज की बड़ी-बड़ी समस्याओं का वर्णन किया जाता है और उन समस्याओं के प्रति हमें आगाह करता है | समाज के इन्हीं समस्याओं को आधार बनाकर नेपाली कथा साहित्य में यथार्थवादी कहानीकार गुरुप्रसाद मैनाली ने अपने कथासंग्रह 'नासो' में कई कहानियाँ लिखी जिसमें नेपाली समाज के समस्याओं को परिलक्षित किया गया है | मैनाली ने जिस प्रकार कहानियों में समस्याओं को कथ्य, चरित्रों का विचार और भावों में बांध कर कहनियाँ गढ़ी वह प्रसंसनिय है | प्रारम्भ में जिस प्रकार हिंदी कहानी का अनुवाद किया गया था इससे पता चलता है कि नेपाली साहित्य हिंदी साहित्य जगत से परिचित था जिसके कारण यह प्रभाव पड़ना स्वभाविक था |

मैनाली जिस दौर में कहानियाँ लिख रहे थे उन पर हिंदी कथा सम्राट प्रेमचंद का प्रभाव दिखाई देता है | यह प्रभाव उन पर किस प्रकार पड़ा इस तथ्य को विभिन्न आलोचकों ने स्पष्ट किया है | इस विषय से यह भी बात निकलकर सामने आयी कि मैनाली पर प्रेमचंद का प्रभाव तो पड़ा था पर उन्होंने उनका सीधा-सीधा अनुकरण नहीं किया | उन्होंने कथा साहित्य में अपने लेखन से मौलिकता लायी | जो उन्हें विशेष बनाती है |

हिंदी और नेपाली कथा साहित्य के अन्तः सम्बन्ध में दोनों भाषाओं के कथा साहित्य को देखा गया है | साथ ही इसमें यह भी देखा गया कि प्रेमचंद और मैनाली से पहले कैसी कहानियाँ लिखी जाती थी और उनके समकालीन कौन कौन से लेखक आए जिन्होंने अपनी कहानियों में यथार्थ का चित्रण किया | अंत में प्रेमचंद और मैनाली की कहानियों में किन-किन समस्याओं को दिखया गया है इसका विश्लेषण किया गया है उनमें क्या समानताएं और असमानताएं देखी गई है इस बात की भी पुष्टि की गई है साथ ही उनके अपने-अपने लेखन की विशेषताओं को भी बताया गाया है | अतः इन सब से निष्कर्ष के तौर पर यह बात सामने आती है कि कोई भी साहित्यकार किसी और साहित्यकार से प्रभावित होता है तो वह प्रभाव उनके विचारों, कथ्यों और शिल्प से होता है |

परिशिष्ट

➢ सन्दर्भ सूची

- अधिकारी, इन्द्रविलास (वि.सं.2066) .तुलनात्मक साहित्य संक्षिप्तपरिचय.ललितपुर.साझा प्रकाशन ISBN 9789993328483
- कमलेश्वर,(सं) (1998) भारतीय शिखर कथा कोश:नेपाली कहानियाँ.नई दिल्ली.पुस्तकायन प्रकाशन. ISBN-81-85134-03-0
- छेत्री, तुलसीदास (त्रि.वि.2028-34).नेपाली साहित्य को विकास मा दार्जिलिंड़को योगदान.काठमाडौं.विद्धावारिधि शोध प्रबंध
- श्रीवास्तव,जितेंद्र (2009).भारतीय समाज की समस्याएँ और प्रेमचंद.दिल्ली.प्रकाशन शब्दसृष्टि.ISBN 81-88077-15-1
- ढुड़गेल,प्रा.भोजराज एवं दाहाल दुर्गाप्रसाद (वि.सं.2070). नेपाली कथा र उपन्यास. काठमाण्डौं. एम.के.पब्लिसर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
- ठाकुर,डॉ उषा (1998).हिंदी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर.नई दिल्ली.वाणी प्रकाशन.ISBN-81-7055-601-5
- डॉ. हरदयाल (2005).हिंदी कहानी परम्परा और प्रगति.नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन.ISBN-81-8143-354-8
- प्रधान,प्रतापचन्द्र (सन्-1983).नेपाली कथावलोकन.दार्जीलिंग.दिपाप्रकाशन
- प्रेमचंद, (2012). मानसरोवर भाग-1 से भाग-8. नई दिल्ली. मेघा बुक्स ISBN-978-81-8166-361-0
- प्रेमचंद, (2008). प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ. इलाहाबाद. सुमितप्रकाशन. ISBN-978-81-8031-127-7
- प्रो. रामबक्ष (1982). प्रेमचंद और भारतीय किसान. नयी दिल्ली. वाणी प्रकाशन ISBN 978-93-5072-151-3
- मधुरेश,(2014).हिंदी कहानी का विकास.इलाहाबाद.सुमित प्रकाशन

- मैनाली,गुरुप्रसाद (वि.सं. 2069).नासो (कथासंग्रह). ललितपुर. सझाप्रकाशन. ISBN-978-9937-32-189-1
- यादव, राजेंद्र (2000). कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन. ISBN-81-7055-473-X
- रेणु,फनीश्वरनाथ (सन्-1999).नेपाली क्रांति कथा.नई दिल्ली.राजकमल प्रकाशन.ISBN-81-7178-700-2
- शर्मा, रामविलास (2011). प्रेमचंद और उनका युग.नई दिल्ली.राजकमल प्रकाशन. ISBN-978-81-267-0505- 4
- शर्मा,हरिप्रसाद (वि.सं.2067)(सन्-2010).कथाको सिद्धान्त र विवेचना.ललितपुर.साझा प्रकाशन.ISBN-978-99933-2-981-7
- शर्मा, रामविलास (1999). कथा विवेचना और गद्य शिल्प. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन
- सिंह,डॉ.नामवर (1968).आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां. इलाहाबाद.लोकभारती प्रकाशन
- शर्मा,डॉ तारानाथ (2070).नेपाली साहित्य को इतिहास.काठमाण्डौं.विद्यार्थी पुस्तक भण्डार.ISBN-978-99946-1-765-4
- शाही, राधेगोविन्द (2006). किसान चेतना और प्रेमचंद का साहित्य. वाराणसी. लोकायत प्रकाशन ISBN 81-87760-10-9
- त्रिपाठी,डॉ वासुदेव (वि.स. 2056).नेपाली साहित्य श्रृंखला (भाग-1).काठमांडू. एकता बुक्स डिस्ट्रिव्युटर्स.प्रा.लि
- श्रेष्ठ,दयाराम 'सम्भव' (वि.स.2032).नेपाली साहित्य का केही पृष्ठ,काठमाडौं,साझा प्रकाशन
- श्रेष्ठ,डॉ दयाराम एवं शर्मा प्रा०मोहनराज शर्मा (वि.सं.2069).नेपाली साहित्य को संक्षिप्त इतिहास. ललितपुर. साझा प्रकाशन. ISBN 978-9937-32-170-9

➢ पत्र-पत्रिका

- जबरा,पुष्करशमशेर.'स्वार्थत्याग', शारदा 4/6/7/ (1995)
- श्रेष्ठ,डॉ.दयाराम'सम्भव'(वि.सं.2057). 'कथाकार गुरुप्रसाद मैनाली'.समकालीन साहित्य-28.(वर्ष-10.अंक-3, आषाढ़-असोज),नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान.काठमांडौ

➢ इंटरनेट

- www.samkalinsahitya.com
- Bharatdiscovery.org/india
- www.himalini.com/त्रिविवि-हिंदी-विभाग: -व.html